नवीन पाठ्यपुस्तकों तथा नवीन पाठ्यक्रम पर आधारित

संजीव®

आल इन वन

यह संजीव आल इन वन पूर्णतः नवीनतम पाठ्यपुस्तकों पर आधारित है।

- पाठ्यपुस्तकों के सम्पूर्ण अभ्यास प्रश्नों का हल
- अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्नों का समावेश
- हिन्दी के पद्य पाठ, अंग्रेजी एवं संस्कृत के सभी पाठों का हिन्दी अनुवाद
- हिन्दी, अंग्रेजी एवं संस्कृत में पाठ्यपुस्तकानुसार व्याकरण का समावेश
- सभी महत्त्वपूर्ण मानचित्रों का समावेश

कक्षा 6

मूल्य 560.00

संजीव प्रकाशन, जयपुर

Visit us at : www.sanjivprakashan.com

इस पुस्तक के सम्बन्ध में जानकारी

गुरुजनों से निवेदन

हमारे अनुभवी लेखकों तथा विषयाध्यापकों ने इस पुस्तक में विद्यार्थियों के लिए अत्यन्त उपयोगी सामग्री प्रस्तुत की है। वस्तुतः इनमें योग्य एवं अनुभवी शिक्षकों के कठिन परिश्रम का निचोड़ समाविष्ट है। प्रत्येक विषय का सरल प्रतिपादन, पाठ्य सामग्री का वर्णन और सम्प्रेषण छात्रों के स्तरानुरूप हो, इन बातों का पूरा ध्यान रखा गया है। इस पुस्तक में पाठ्यपुस्तकों के अभ्यास प्रश्नों का सम्पूर्ण हल तो दिया ही गया है साथ ही परीक्षा के दृष्टिकोण से अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्नों का भी समावेश किया गया है। इस पुस्तक में सभी प्रमुख विषयों का पाठ्यक्रमानुसार अत्यन्त सारगर्भित वर्णन किया गया है जो कि विद्यार्थी के लिए अत्यन्त लाभप्रद होगा।

आपका सहयोग एवं आगामी संस्करण के लिए आपके बहुमूल्य सुझाव एवं निर्देश अपेक्षित हैं।

प्रकाशक

विद्यार्थियों को पुस्तक के सम्बन्ध में जानकारी

- कक्षा 6 में सत्र 2020-21 से राजस्थान पाठ्य पुस्तक मण्डल द्वारा NCERT की पाठ्यपुस्तकों को लगाया गया है। इन पाठ्यपुस्तकों में प्रत्येक अध्याय के अन्त में दिए गये अभ्यास प्रश्नों के अतिरिक्त अध्यायों के बीच-बीच में भी विभिन्न प्रकार के प्रश्न दिये हुए हैं। इन प्रश्नों में जो भी प्रश्न विद्यार्थियों के लिये उपयोगी हो सकते हैं उन सभी के उत्तर इस **संजीव आल इन वन** में दिये गये हैं। अध्याय के बीच-बीच में आये इन प्रश्नों को इस **संजीव आल इन वन** में **'पाठ-सार'** के बाद **'पाठगत प्रश्न'** शीर्षक के अन्तर्गत दिया गया है। साथ ही विद्यार्थियों की सुविधा के लिए पाठ्यपुस्तक में जिस पृष्ठ पर इस प्रकार के प्रश्न दिये गये हैं उसकी पृष्ठ संख्या भी **संजीव आल इन वन** में दी गयी है।
- प्रत्येक पाठ या अध्याय के प्रारम्भ में संक्षेप में उसका सार दिया गया है। हमारे विद्वान लेखकों द्वारा इस पाठ-सार में 'गागर में सागर' भरने का प्रयास किया है। विद्यार्थी इसे पढ़कर पूरे पाठ का निष्कर्ष सरलता से समझ सकते हैं।
- पाठ्यपुस्तकों के समस्त अभ्यास प्रश्नों का सम्पूर्ण हल दिया गया है साथ ही परीक्षा के दृष्टिकोण से अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्नों का भी समावेश किया गया है।
- प्रत्येक पाठ या अध्याय में **वस्तुनिष्ठ, अतिलघूत्तरात्मक, लघूत्तरात्मक** एवं **निबन्धात्मक** आदि सभी प्रकार के प्रश्नोत्तर दिये गये हैं। परीक्षा में जिस-जिस प्रकार के प्रश्न पूछे जाते हैं, उन सभी को इस पुस्तक में दिया गया है।
- यह पुस्तक प्रश्नोत्तर रूप में श्रेष्ठ पुस्तक ही नहीं बल्कि **अभ्यास पुस्तिका** भी है। इसके अध्ययन से विद्यार्थी परीक्षा में अधिक अंक प्राप्त कर सकेंगे-ऐसा हमें पूर्ण विश्वास है।

प्रकाशक

प्रकाशक
संजीव प्रकाशन
धामाणी मार्केट, चौड़ा रास्ता, जयपुर
© प्रकाशकाधीन

लेजर टाइपसैटिंग
संजीव प्रकाशन (D.T.P. Dept.), जयपुर
अक्षत कम्प्यूटर्स, जयपुर
मेगा ग्राफिक्स, जयपुर

कक्षा-6 आल इन वन की विशेषताएँ

* पाठ्यपुस्तकों के सम्पूर्ण अभ्यास प्रश्नों का हल। अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्नों के अन्तर्गत परीक्षोपयोगी सभी प्रकार के प्रश्नों का समावेश।
* पाठ्यपुस्तकों में अध्यायों के बीच-बीच में भी विभिन्न प्रकार के प्रश्न दिये हुए हैं। विद्यार्थियों के लिए उपयोगी इन सभी प्रश्नों के उत्तर 'पाठगत प्रश्न' शीर्षक के अन्तर्गत दिये गये हैं।
* अंग्रेजी एवं संस्कृत के सभी पाठों का कठिन शब्दार्थ सहित हिन्दी अनुवाद।
* हिन्दी के सभी पद्य पाठों की सप्रसंग व्याख्या।
* हिन्दी, अंग्रेजी एवं संस्कृत में पाठ्यपुस्तकानुसार एवं पाठ्यक्रमानुसार व्याकरण का समावेश।
* सभी विषयों का वर्णन सन्तुलित दिया गया है। किसी भी विषय में न तो अनावश्यक मैटर दिया गया है और न ही किसी Topic को छोड़ा गया है।

छात्र/छात्रा का नाम .....

कक्षा ..... वर्ग .....

विषय .....

विद्यालय का नाम .....

सूचना—

इस पुस्तक में त्रुटियों को दूर करने के लिए हर संभव प्रयास किया गया है। किसी भी त्रुटि के पाये जाने पर अथवा किसी भी तरह के सुझाव के लिए आप हमें निम्न पते पर email या पत्र भेजकर सूचित कर सकते हैं– email : sanjeevprakashanjaipur@gmail.com

पता : प्रकाशन विभाग
संजीव प्रकाशन
धामाणी मार्केट, चौड़ा रास्ता, जयपुर

आपके द्वारा भेजे गये सुझावों से अगला संस्करण और बेहतर हो सकेगा।

यद्यपि इस पुस्तक को प्रकाशित करने में सभी सावधानियों का पालन किया गया है तथापि किसी भी गलती के लिए प्रकाशक या मुद्रक उत्तरदायी नहीं होंगे।

आल इन वन

कक्षा-6

विषय-सूची

ENGLISH

HONEYSUCKLE

1. Who Did Patrick's Homework? 1
   (i) A House, A Home 6
2. How the Dog Found Himself a New Master ! 9
   (ii) The Kite 14
3. Taro's Reward 17
   (iii) The Quarrel 23
4. An Indian-American Woman in Space : Kalpana Chawla 25
   (iv) Beauty 33
5. A Different Kind of School 35
   (v) Where Do All the Teachers Go? 43
6. Who I am? 47
   (vi) The Wonderful Words 51
7. Fair Play 53
   (vii) Vocation 62
8. The Banyan Tree 67

GRAMMAR AND VOCABULARY

GRAMMAR

1. Articles 76
2. Tenses 78
3. Framing Questions 88
4. Relative Pronouns 90
5. Prepositions 91
6. Jumbled Words/Phrases 94
7. Active Voice—Passive Voice 97
8. Adjectives—Their Kinds and Degrees 98
9. Co-ordinating Conjunctions 99
10. Imperative Sentences 101
11. Modals 101
12. Adverbs of Place, Time and Manner 103
13. Phrasal Verbs 103

VOCABULARY

1. Sounds 106
2. Opposites/Antonyms 106
3. Homophones 108
4. One-word Substitution 109
5. Word Formation 111
6. Number 114
7. Gender 116
8. Words in Situation or Suitable Words 117
9. Prefix 118

READING

Unseen Passages for Comprehension 119-123

WRITING

1. Paragraph Writing 123-130
2. Story Writing 130-137
3. Letter Writing 137-138
4. Application Writing 139-141

5. Description of Pictures 141-143
6. Process Writing 143-144
Oral Examination 144-146
Useful Words of Daily Use 147-148

हिन्दी

वसंत : भाग-1

1. वह चिड़िया जो (कविता) 149
2. बचपन (संस्मरण) 152
3. नादान दोस्त (कहानी) 156
4. चाँद से थोड़ी-सी गप्पें (कविता) 160
5. साथी हाथ बढ़ाना (गीत) 164
6. ऐसे-ऐसे (एकांकी) 169
7. टिकट-अलबम (कहानी) 172
8. झाँसी की रानी (कविता) 177
9. जो देखकर भी नहीं देखते (निबन्ध) 184
10. संसार पुस्तक है (पत्र) 188
11. मैं सबसे छोटी होऊँ (कविता) 193
12. लोकगीत (निबन्ध) 196
13. नौकर (निबन्ध) 200
14. वन के मार्ग में (कविता) 205

व्याकरण-खण्ड

1. संज्ञा 209
2. सर्वनाम 210
3. विशेषण 211
4. क्रिया 212
5. वाच्य 213
6. क्रिया-विशेषण 214
7. लिंग 215
8. कारक 216
9. अव्यय 217
10. विलोम शब्द 218
11. पर्यायवाची 219
12. एकल शब्द 221
13. सन्धि 222
14. समास 223
15. उपसर्ग 224
16. प्रत्यय 225
17. तत्सम शब्द 226
18. युग्म-शब्द 227
19. शुद्ध शब्द एवं शुद्ध वाक्य 227
20. मुहावरे और कहावतें 228
21. विराम-चिह्न 231
22. वाक्य-परिचय 232
अपठित **233-235**

रचना

1. पत्र-लेखन 235-237
2. निबन्ध-लेखन 238-244
3. कहानी लेखन 244-245
हिन्दी मौखिक परीक्षा **245**

संस्कृत

रुचिरा-प्रथमो भागः

प्रथमः पाठः शब्द-परिचयः-I 246
द्वितीयः पाठः शब्द-परिचयः-II 249
तृतीयः पाठः शब्द-परिचयः-III 252
चतुर्थ पाठः विद्यालयः 254
पञ्चमः पाठः वृक्षाः 257
षष्ठः पाठः समुद्रतटः 260
सप्तमः पाठः बकस्य प्रतीकारः 264

अष्टम: पाठ:	सूक्तिस्तबक:	269
नवम: पाठ:	क्रीडास्पर्धा	271
दशम: पाठ:	कृषिका: कर्मवीरा:	275
एकादश: पाठ:	दशम: त्वम् असि	277
द्वादश: पाठ:	विमानयानं रचयाम	281
त्रयोदश: पाठ:	अहह आ: च	284

व्याकरण एवं लेखन/रचना

(परिशिष्ट सहित)

1. कारक-विभक्ति-परिचय:	289-290
2. शब्दरूपाणि	290-294
संज्ञा-शब्द	290-292
सर्वनाम-शब्द	292-294
3. धातु-रूपाणि	294-297
4. विशेषण	297-298
5. वर्ण-विच्छेद/वर्ण-संयोग	298
6. सन्धि	298-300
7. प्रत्यय	300-301
8. उपसर्ग	301
9. अव्यय	301-302
10. कर्त्ता एवं क्रिया	303
11. संख्यावाची (विशेषण) शब्द	303-305
12. चित्रवर्णनम् (वाक्य-रचना)	305
13. संस्कृत में प्रार्थना-पत्रम्	305-307
14. लघु-निबन्ध लेखन	307-308
15. हिन्दी से संस्कृत में अनुवाद	308
16. अपठित-अवबोधनम्	308-310
श्लोक-लेखनम्	**310**

विज्ञान

1. भोजन के घटक	311
2. वस्तुओं के समूह बनाना	316
3. पदार्थों का पृथक्करण	320
4. पौधों को जानिए	326
5. शरीर में गति	334
6. सजीव—विशेषताएँ एवं आवास	340
7. गति एवं दूरियों का मापन	346
8. प्रकाश—छायाएँ एवं परावर्तन	352
9. विद्युत तथा परिपथ	356
10. चुंबकों द्वारा मनोरंजन	361
11. हमारे चारों ओर वायु	366

गणित

1. अपनी संख्याओं की जानकारी	371
2. पूर्ण संख्याएँ	385
3. संख्याओं के साथ खेलना	389
4. आधारभूत ज्यामितीय अवधारणाएँ	404
5. प्रारम्भिक आकारों को समझना	409
6. पूर्णांक	423
7. भिन्न	430
8. दशमलव	450
9. आँकड़ों का प्रबन्धन	458
10. क्षेत्रमिति	461
11. बीजगणित	473
12. अनुपात और समानुपात	476
दिमागी कसरत	**487**

सामाजिक विज्ञान

हमारे अतीत–1 (इतिहास)

1. प्रारम्भिक कथन : क्या, कब, कहाँ और कैसे? 494
2. आखेट—खाद्य संग्रह से भोजन उत्पादन तक 499
3. आरम्भिक नगर 504
4. क्या बताती हैं हमें किताबें और कब्रें 511
5. राज्य, राजा और एक प्राचीन गणराज्य 516
6. नए प्रश्न नए विचार 521
7. राज्य से साम्राज्य 527
8. गाँव, शहर और व्यापार 532
9. नए साम्राज्य और राज्य 540
10. इमारतें, चित्र तथा किताबें 546

सामाजिक एवं राजनीतिक जीवन–1

इकाई I : विविधता

1. विविधता की समझ 551
2. विविधता एवं भेदभाव 558

इकाई II : सरकार

3. सरकार क्या है? 566

इकाई III : स्थानीय सरकार और प्रशासन

4. पंचायती राज 571
5. गाँव का प्रशासन 576
6. नगर प्रशासन 582

इकाई IV : आजीविकाएँ

7. ग्रामीण क्षेत्र में आजीविका 587
8. शहरी क्षेत्र में आजीविका 594

पृथ्वी–हमारा आवास (भूगोल)

1. सौरमण्डल में पृथ्वी 601
2. ग्लोब : अक्षांश एवं देशान्तर 607
3. पृथ्वी की गतियाँ 611
4. मानचित्र 615
5. पृथ्वी के प्रमुख परिमण्डल 619
6. हमारा देश : भारत 627

हमारा राजस्थान भाग–1

1. राजस्थान—एक परिचय 631
2. राजस्थान का इतिहास 634
3. इतिहास जानने के स्रोत 637
4. राजस्थान में प्राचीन सभ्यता स्थल 640
5. आजादी से पूर्व सरकार का स्वरूप 643
6. राजस्थान का भौतिक स्वरूप 647
7. जल संसाधन एवं संरक्षण 651
8. आजीविका के प्रमुख क्षेत्र 656
9. राजस्थान में आधारभूत सेवाएँ 659
10. लोक संस्कृति एवं कला 663

मानचित्र सम्बन्धी प्रश्न 670–672

◆◆◆

ये हम नहीं कहते, जमाना कहता है

संजीव बुक्स है नं. 1

कक्षा 3 से एम.ए. के लिये

राजस्थान पत्रिका — **राजस्थान का प्रमुख दैनिक**

जयपुर, 22 जनवरी , 2024

विद्यार्थियों की पहली पसंद संजीव बुक्स

जयपुर। नए घटनाक्रम, प्रमाणित आंकड़े और सरल भाषा के चलते संजीव बुक्स, इंग्लिश कोर्स, रिफ्रेशर आदि पुस्तकें कक्षा 3 से 12वीं तक के विद्यार्थियों की पहली पसंद बनी हुई हैं। संजीव प्रकाशन के निदेशक प्रदीप मित्तल एवं मनोज मित्तल ने बताया कि कक्षा 3 से 9 के लिए संजीव आल इन वन, कक्षा 9 से 12 के लिए संजीव बुक्स प्रकाशित की जा रही हैं। पुस्तकें नवीनतम पाठ्यक्रमानुसार तैयार की गई हैं। इसके अलावा अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों के लिए कक्षा 5 से 8 के लिए संजीव रिफ्रेशर आल इन वन तथा कक्षा 9 से 12 के लिए अलग-अलग विषय पर संजीव रिफ्रेशर प्रकाशित की जाती हैं। प्रत्येक विषय की पुस्तक को योग्य तथा अनुभवी विशेषज्ञ प्राध्यापकों से लिखवाया जाता है। विद्यार्थियों का कहना है कि इसमें उन्हें सरल भाषा में पूरा पाठ्यक्रम, पर्याप्त संख्या में प्रश्न-उत्तर, प्रमाणित आंकड़े, नवीनतम जानकारी उचित मूल्य पर उपलब्ध हो जाती है। विद्यालय स्तर से लेकर कॉलेज स्तर तक संजीव बुक्स अपनी उत्कृष्ट पाठ्यसामग्री के आधार पर सर्वश्रेष्ठ सहायक पुस्तकें बनी हुई हैं।

दैनिक भास्कर — **राजस्थान का प्रमुख दैनिक**

जयपुर, 17 जनवरी , 2024

विद्यार्थियों में सर्वाधिक लोकप्रिय संजीव बुक्स

जयपुर। अपनी उच्च गुणवत्तायुक्त पाठ्यसामग्री, नवीनतम घटनाक्रम, प्रमाणित आंकड़ों तथा सरल भाषा के चलते संजीव प्रकाशन द्वारा प्रकाशित संजीव बुक्स, संजीव इंग्लिश कोर्स, संजीव साइंस पाठ्यपुस्तकें, संजीव रिफ्रेशर आदि पुस्तकें कक्षा 3 से 12 तक के विद्यार्थियों की पहली पसंद बनी हुई हैं। लाखों विद्यार्थी संजीव बुक्स की सहायता से अपनी सम्पूर्ण पढ़ाई कर सफलता अर्जित कर रहे हैं। संजीव प्रकाशन के निदेशक प्रदीप मित्तल एवं मनोज मित्तल ने बताया कि कक्षा 3 से 9 के लिए संजीव आल इन वन तथा कक्षा 9 से 12 के लिए अलग-अलग विषय पर संजीव बुक्स प्रकाशित की जाती हैं। विद्यार्थियों के लिए अंग्रेजी विषय को आसानी से समझने के लिए कक्षा 6 से 12 के लिए संजीव इंग्लिश कोर्स प्रकाशित किये जाते हैं जो कि अंग्रेजी विषय की सर्वाधिक लोकप्रिय पुस्तकें हैं।

दैनिक नवज्योति — **राजस्थान का प्रमुख दैनिक**

जयपुर, 17 जनवरी , 2024

विद्यार्थियों में सर्वाधिक लोकप्रिय संजीव बुक्स

ब्यूरो, नवज्योति/जयपुर। अपनी उच्च गुणवत्तायुक्त पाठ्यसामग्री, नवीनतम घटनाक्रम, प्रमाणित आंकड़ों तथा सरल भाषा के चलते संजीव प्रकाशन द्वारा प्रकाशित संजीव बुक्स, संजीव इंग्लिश कोर्स, संजीव साइंस पाठ्यपुस्तकें, संजीव रिफ्रेशर आदि पुस्तकें कक्षा 3 से 12 तक के विद्यार्थियों की पहली पसंद बनी हुई हैं। संजीव बुक्स की लोकप्रियता के बारे में विद्यार्थियों से बात करने पर उन्होंने बताया कि इसमें उन्हें सरल भाषा में पूरा पाठ्यक्रम, पर्याप्त संख्या में प्रश्न-उत्तर, प्रमाणित आंकड़े, नवीनतम जानकारी उचित मूल्य पर उपलब्ध हो जाती है। इसीलिए सभी विद्यार्थी सहायक पुस्तकों के रूप में संजीव बुक्स को ही खरीदना पसन्द करते हैं। संजीव प्रकाशन के निदेशक प्रदीप मित्तल एवं मनोज मित्तल ने बताया कि कक्षा 3 से 9 के लिए संजीव आल इन वन तथा कक्षा 9 से 12 के लिए अलग-अलग विषय पर संजीव बुक्स प्रकाशित की जाती हैं। विद्यार्थियों के लिए अंग्रेजी विषय को आसानी से समझने के लिए कक्षा 6 से 12 के लिए संजीव इंग्लिश कोर्स प्रकाशित किए जाते हैं जो कि अंग्रेजी विषय की सर्वाधिक लोकप्रिय पुस्तकें हैं। इसी प्रकार कक्षा 11 एवं 12 के साइन्स के विद्यार्थियों की विशेष आवश्यकता को देखते हुए संजीव साइन्स की पाठ्यपुस्तकें प्रकाशित की जाती हैं। इसके अलावा अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों के लिए कक्षा 5 से 8 के लिए संजीव रिफ्रेशर ऑल इन वन तथा कक्षा 9 से 12 के लिए अलग-अलग विषय पर संजीव रिफ्रेशर प्रकाशित की जाती हैं।

मित्तल बन्धुओं ने आगे बताया कि उनके द्वारा प्रकाशित संजीव बुक्स सहित अन्य सभी पुस्तकें पूर्णत: नवीनतम पाठ्यपुस्तकों एवं नवीनतम पाठ्यक्रमानुसार तैयार कराई जाती हैं।

प्रकाशक : **संजीव प्रकाशन, जयपुर**

English—Class-6

HONEYSUCKLE

1. Who Did Patrick's Homework?

[पैट्रिक का गृहकार्य किसने किया था?]

Before you read :

कक्षा में चर्चा करें–क्या आप गृहकार्य पसन्द करते हैं? क्या आप स्वयं इसे करते हैं या आप इसे करने में किसी की सहायता लेते हैं? आपका प्राय: किस प्रकार का गृहकार्य होता है?

कठिन शब्दार्थ एवं हिन्दी अनुवाद

Patrick never did..... hated homework. (Page 7)

कठिन शब्दार्थ–Never (नेव(र्)) = कभी नहीं। **too** (टू) = अपेक्षा से अधिक। **boring** (बॉरिङ्) = अरुचिकर, नीरस। **Nintendo** (निन्टेन्डो) = एक प्रकार का वीडियो खेल। **instead** (इन्'स्टेड्) = व्यक्ति या वस्तु के स्थान पर। **learn** (लर्न्) = ज्ञान, कौशल सीखना। **thing** (थिङ्) = कोई गुण या दशा। **true** (ट्रू) = सही। **sometimes** (सम्टाइम्ज्) = कभी-कभी। **feel** (फील्) = कुछ महसूस होना। **like** (लाइक्) = समान, तुल्य। **ignoramus** (इग्न'रेमस्) = अज्ञानी, अनजान।

हिन्दी अनुवाद–पैट्रिक कभी भी गृहकार्य नहीं करता था। वह कहता था, ''अपेक्षा से अधिक अरुचिकर।'' वह इसके स्थान पर हॉकी, बॉस्केट बॉल और निन्टेन्डो (वीडियो का खेल) खेलता था। उसके शिक्षक उसको कहते थे, ''पैट्रिक! अपना गृहकार्य करो अन्यथा तुम कुछ भी नहीं सीख पाओगे।'' और यह सत्य है, कभी-कभी वह एक अज्ञानी के समान महसूस करता था। मगर वह क्या कर सकता था? वह गृहकार्य से घृणा करता था।

Then one day he.....promise you that. (Pages 7-8)

कठिन शब्दार्थ–Then (देन्) = फिर, तब। **found** (फाउन्ड्) (find का past tense और past participle) = पाया। **little** (लिट्ल्) = छोटी। **grab** (ग्रैब्) = झपटकर किसी चीज़ को पकड़ना, छीनना (past tense grabbed)। **surprise** (स'प्राइज्) = आश्चर्य, हैरानी। **doll** (डॉल्) = गुड़िया। **tiniest (degree-tiny)** (टाइनिएस्ट) = सबसे छोटा। **fashioned** (फैशन्ड) = प्रचलित तरीका। **britches (breeches)** (ब्रिचिज़) = छोटा, घुटनों तक का पायजामा। **witch** (विच्) = जादूगरनी। **yell** (येल्) = जोर से चिल्लाना, चीखना। **grant** (ग्रान्ट्) = किसी को कुछ प्रदान करना। **wish** (विश्) = अभिलाषा, कामना। **promise** (प्रॉमिस्) = वादा, प्रतिज्ञा।

हिन्दी अनुवाद–फिर एक दिन उसने अपनी बिल्ली को एक छोटी गुड़िया से खेलते हुए पाया और उसने उसे झपटकर छीन लिया। यह जानकर उसे आश्चर्य हुआ कि यह एक गुड़िया नहीं थी, बल्कि सबसे छोटे आकार का एक बौना आदमी था। उसने छोटा-सा ऊन का शर्ट और पुराने प्रचलित तरीके का घुटनों तक का पायजामा पहना था और जादूगरनी की तरह एक ऊँचा-लम्बा टोप लगा रखा था। वह चीखा, ''मुझे बचाओ! मुझे उस बिल्ली के पास वापस मत दो। मैं आपकी एक इच्छा पूरी करूँगा, मैं आपसे इसका वादा करता हूँ।''

Patrick couldn't believe.....even get A's." (Page 8)

कठिन शब्दार्थ–believe (बिलीव्) = विश्वास करना। **how** (हाउ) = कितना (आश्चर्य, प्रसन्नता आदि व्यक्त करने के लिए प्रयुक्त)। **lucky** (लकि) = भाग्यशाली। **problem** (प्रॉब्लम्) = समस्या। **so** (सो) = इस

ढंग से। **till** (टिल्) = समय या घटना के होने तक। **semester** (सि'मेस्ट(र्)) = स्कूल का अध्ययन सत्र। **enough** (इ'नफ्) = पर्याप्त, काफी। **job** (जॉब्) = नौकरी। **even** (ईव्न्) = नियमित।

हिन्दी अनुवाद–पैट्रिक को विश्वास नहीं हुआ कि वह कितना भाग्यशाली था! यहाँ पर उसकी समस्त समस्याओं का हल था। इसलिए उसने कहा, "अच्छा हो, यदि इस अध्ययन सत्र के अन्त तक जो कि 35 दिनों का है, आप मेरा सारा गृहकार्य करते रहें। यदि आप पर्याप्त रूप से अच्छा काम करते रहे, तो मैं नियमित रूप से A ग्रेड प्राप्त कर सकता हूँ।"

The little man's face..... . But I'll do it." (Page 8)

कठिन शब्दार्थ–Wrinkled (रिङ्क्ल्ड) = झुर्रीदार, शिकनदार। **dish cloth** (डिश् क्लॉथ्) = बर्तन धोने का कपड़ा। **thrown** (थ्रोन्) = जल्दबाजी या लापरवाही में किसी वस्तु को कहीं डाल देना। **hamper** (हैम्प(र्)) = भोजन ले जाने की ढक्कनदार टोकरी। **kick** (किक्) = लात मारने की क्रिया। **fist** (फिस्ट्) = मुट्ठी। **grimace** (ग्रिमेस्) = क्रोध, घृणा, पीड़ा आदि को दर्शाने वाली चेहरे पर की ऐंठन, खिंचाव आदि। **scowl** (स्काउल्) = त्यौरी चढ़ाना, नाक भौं सिकोड़ना। **pursed his lips** (पस्ट् हिज् लिप्स) = नापसन्दगी प्रकट करने के लिए होंठ बिचकाना। **cursed** (कस्ड) = अभिशापित।

हिन्दी अनुवाद–उस बौने आदमी का चेहरा ढक्कनदार टोकरी में डाले हुए बर्तन धोने वाले झुर्रीदार कपड़े जैसा हो गया। उसने अपने पैरों को पटका और अपनी मुट्ठियों को दुगुने जोश से बन्द किया और उसने त्यौरी चढ़ाकर, क्रोध और घृणा के भाव से अपने होंठों को बिचकाया और कहा, "ओह, क्या मैं अभिशापित हूँ! मगर मैं इसे करूँगा।"

And true to his word.....in whatever way. (Page 9)

कठिन शब्दार्थ–elf (एल्फ्) = नुकीले कानों और जादुई शक्तियों वाला एक छोटा प्राणी। **began** (बिगैन्) = शुरू करना। **Except** (इक्'सेप्ट्) = इसके सिवा। **glitch** (ग्लिच्) = तकनीकी समस्या। **know** (नो) = जानना। **need** (नीड्) = आवश्यकता। **whatever** (वॉट्'एव(र्)) = कोई या प्रत्येक।

हिन्दी अनुवाद–और अपने शब्दों के अनुसार सत्यता के साथ वह बौना प्राणी पैट्रिक का गृहकार्य करने लगा था। किन्तु इसमें एक समस्या थी। उस बौने को हर बार यह पता नहीं होता था कि उसे क्या करना है तथा उसे हर बार मदद की आवश्यकता पड़ती थी। "मेरी सहायता करो! मेरी सहायता करो!" वह कहता था। और पैट्रिक को उसकी सहायता करनी ही पड़ती थी—चाहे वह किसी भी रूप में हो।

"I don't know this.....out by each letter". (Page 9)

कठिन शब्दार्थ–squeak (स्क्वीक्) = चूं-चूं, चरमराहट की आवाज। **while** (वाइल्) = उस समय जब। **dictionary** (डिक्शन्रि) = शब्दकोश। **look up** (लुक् अप्) = तलाश करना। **sound** (साउण्ड्) = ध्वनि। **by** (बाइ) = उल्लेखित मात्रा में। **letter** (लैट(र्)) = अक्षर।

हिन्दी अनुवाद–"मैं यह शब्द नहीं जानता हूँ" वह बौना ऊँची आवाज में कहता जब वह पैट्रिक के गृहकार्य को पढ़ रहा होता था। "मुझे एक शब्दकोश दे दो। नहीं, इससे भी अच्छा, शब्द को तलाश करो और प्रत्येक अक्षर को स्पष्टता से बोलें।"

When it came to maths.....read them too. (Pages 9-10)

कठिन शब्दार्थ–out of luck (आउट् ऑव् लक्) = बदकिस्मत। **luck** (लक्) = भाग्य। **shriek** (श्रीक्) = चीख मारना। **addition** (अडिशन्) = योग, जोड़ने की क्रिया। **subtraction** (सब्'ट्रैक्शन्) = घटाने की क्रिया। **division** (डिविशन्) = भाग करना। **fraction** (फ्रैक्शन्) = छोटा अंश या छोटी मात्रा। **beside** (बि'साइड्) = के बगल, के पास। **simply** (सिम्प्लि) = बिलकुल, पूरी तरह से। **guide** (गाइड्) = मदद करना। **human** (ह्यूमन्) = मनुष्य। **history** (हिस्ट्री) = इतिहास। **mystery** (मिस्ट्रि) = रहस्य, भेद की बात। **already** (आल्'रेडि) = बीती घटना के लिए प्रयुक्त। **shouter** (शाउट्(र्)) = जोर की आवाज में पुकारना। **library** (लाइब्रेरि) = पुस्तकालय।

हिन्दी अनुवाद–जब गणित की बारी आई, पैट्रिक बदकिस्मत था। "समय-सारणी क्या हैं?" वह बौना चीखा। "हम बौने लोगों को इसकी आवश्यकता कभी नहीं होती है। और जोड़ना और घटाना, और भाग करना और भिन्न? यहाँ मेरे पास में बैठ जाओ, आपको मेरी अच्छे से मदद करनी है।" बौने लोग मानव इतिहास के बारे में कुछ भी नहीं जानते हैं, उनके लिए यह एक रहस्य की बात है। इस प्रकार से वह बौना, जो पहले से ही चिल्ला रहा था अब और

हिन्दी–कक्षा-6

वसंत (भाग-1)

1. वह चिड़िया जो

सप्रसंग व्याख्या/भावार्थ

कठिन-शब्दार्थ–जुंडी = ज्वार। **रुचि** = पसन्द, इच्छा। **रस** = आनन्द, स्वाद। **सन्तोषी** = सन्तोष रखने वाली। **कण्ठ** = गला। **खातिर** = के लिए, हेतु। **विजन** = एकान्त, जंगल। **चढ़ी नदी** = पानी से लबालब भरी नदी। **टटोलकर** = खोजकर। **गरबीली** = गर्व करने वाली।

1. वह चिड़िया जो– ..... मुझे अन्न से बहुत प्यार है।

प्रसंग–प्रस्तुत काव्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक वसंत भाग-1 की 'वह चिड़िया जो' नामक कविता से लिया गया है। इसके रचयिता श्री केदारनाथ अग्रवाल हैं। इसमें नीले पंखों वाली चिड़िया के स्वभाव आदि के बारे में बताया गया है।

व्याख्या/भावार्थ–कवि वर्णन करता है कि जिसके पंख नीले हैं, वह चिड़िया अपनी चोंच से ज्वार के दूध भरे कच्चे दानों को रुचि से खाती है। उसे उन दूध भरे कच्चे दानों को खाने में बहुत आनन्द आता है। वह चिड़िया छोटी और सन्तोषी स्वभाव वाली है। वह कहती है कि मुझे अन्न के दाने बहुत प्रिय हैं।

2. वह चिड़िया जो– ..... मुझे विजन से बहुत प्यार है।

प्रसंग–प्रस्तुत काव्यांश 'वह चिड़िया जो' नामक कविता से लिया गया है। इसमें कवि ने चिड़िया द्वारा मधुर स्वर में गाने तथा खुले आकाश में उड़ने का वर्णन किया है।

व्याख्या/भावार्थ–कवि वर्णन करता है कि वह चिड़िया बूढ़े वन-बाबा को अर्थात् वन प्रदेश को खुश करने के लिए मुक्त कंठ से मधुर आवाज में चहचहाती है। वह छोटी-सी चिड़िया जंगल-बाबा की मुँह-बोली बेटी के समान है, उसके नीले पंख अत्यधिक सुन्दर हैं। वह कहती है कि मुझे जंगल से बहुत प्यार है, अर्थात् उसे वन में स्वतंत्र रहना मनोरम लगता है।

3. वह चिड़िया जो–..... मुझे नदी से बहुत प्यार है।

प्रसंग–प्रस्तुत काव्यांश 'वह चिड़िया जो' नामक कविता से लिया गया है। इसमें कवि ने उसके गर्वयुक्त स्वभाव तथा स्वतंत्र विचरण का वर्णन किया है।

व्याख्या/भावार्थ–कवि कहता है कि वह चिड़िया अपनी चोंच से उस नदी का पानी लाती है जिसमें ऊपर किनारों तक पानी लबालब भरा रहता है। वह नदी के वेग का अनुमान लगाकर उससे जल-कण रूपी मोती ले आती है और अपनी प्यास बुझाती है। वह छोटी तथा गर्व करने वाली चिड़िया है। वह चिड़िया कहती है कि मैं सुन्दर नीले पंखों वाली हूँ और मुझे नदी से बहुत प्यार है, अर्थात् मैं बहती नदी का पानी स्वतन्त्रतापूर्वक पीना चाहती हूँ।

पाठ्यपुस्तक के प्रश्न

कविता से–

प्रश्न 1. कविता पढ़कर तुम्हारे मन में चिड़िया का जो चित्र उभरता है, उस चित्र को कागज पर बनाओ।

उत्तर–कविता को पढ़कर हमारे मन में यह चित्र उभरता है–

(1) चिड़िया का आकार छोटा है।
(2) वह नीले पंखों वाली सुंदर चिड़िया है।
(3) वह मधुर स्वर में गाती है।

(4) वह नदी का पानी पीती है।
(5) वह साहस एवं स्वतन्त्रता से जीती है।

प्रश्न 2. तुम्हें कविता का कोई और शीर्षक देना हो तो क्या शीर्षक देना चाहोगे? उपयुक्त शीर्षक सोचकर लिखो।

उत्तर–कविता का अन्य उपयुक्त शीर्षक–'छोटी चिड़िया', 'सुन्दर चिड़िया' या 'सयानी रानी चिड़िया' हो सकता है।

प्रश्न 3. इस कविता के आधार पर बताओ कि चिड़िया को किन-किन चीजों से प्यार है?

उत्तर–चिड़िया को दूध भरे ज्वार के कच्चे दानों से, जंगल से, बहती नदी से और स्वतन्त्र विचरण करने से प्यार है।

प्रश्न 4. आशय स्पष्ट करो–

(क) रस उँडेलकर गा लेती है

(ख) चढ़ी नदी का दिल टटोलकर
जल का मोती ले जाती है

उत्तर–(क) चिड़िया जंगल में स्वतंत्र रूप से रहती है, उसे किसी तरह का बन्धन नहीं है। वह स्वतंत्र होने से मधुर स्वर में गाती है और अपने मीठे स्वर से वातावरण को आनन्द से भर देती है।

(ख) चिड़िया स्वतंत्र होने से वन, उपवन, पर्वत, नदी आदि जगहों पर कहीं भी जा सकती है। वह पानी के वेग से लबालब भरी नदी की अथाह जलराशि का अनुमान लगाती है और उससे जल-कण रूपी मोती लेकर अपनी प्यास बुझाती है।

अनुमान और कल्पना–

प्रश्न 1. कवि ने नीली चिड़िया का नाम नहीं बताया है। वह कौन-सी चिड़िया रही होगी ? इस प्रश्न का उत्तर जानने के लिए पक्षी-विज्ञानी सालिम अली की पुस्तक 'भारतीय पक्षी' देखो। इनमें ऐसे पक्षी भी शामिल हैं जो जाड़े में एशिया के उत्तरी भाग और अन्य ठंडे देशों से भारत आते हैं। उनकी पुस्तक को देखकर तुम अनुमान लगा सकते हो कि इस कविता में वर्णित नीली चिड़िया शायद इनमें से कोई एक रही होगी–

नीलकण्ठ
छोटा किलकिला
कबूतर
बड़ा पतरिंगा

उत्तर–इस कविता में वर्णित नीली चिड़िया शायद नीलकण्ठ रही होगी, क्योंकि उसके शरीर का अधिकांश भाग नीले रंग का, आकार छोटा और आवाज मधुर होती है।

प्रश्न 2. नीचे कुछ पक्षियों के नाम दिए गए हैं। उनमें यदि कोई पक्षी एक से अधिक रंग का है तो लिखो कि उसके किस हिस्से का रंग कैसा है ? जैसे तोते की चोंच लाल है, शरीर हरा है–
मैना, कौआ, बतख, कबूतर।

उत्तर–

पक्षी	चोंच का रंग	शरीर का रंग	आँख	गर्दन
मैना	काली	धब्बेदार	काली	धब्बेदार
कौआ	काला	काला	काली	काली
बतख	हल्की पीली	भूरा, सफेद	काली	भूरी, सफेद
कबूतर	हल्की काली	भूरा, सफेद	लाल	स्लेटी

प्रश्न 3. कविता का हर बंध 'वह चिड़िया जो'– से शुरू होता है और 'मुझे बहुत प्यार है' पर खत्म होता है। तुम भी इन पंक्तियों का प्रयोग करते हुए अपनी कल्पना से कविता में कुछ नए बंध जोड़ो।

उत्तर– वह चिड़िया जो–
पंख फैलाकर
आसमान की दूरी नापकर
ऊँची उड़ान भर लेती है
नीले पंखों वाली मैं हूँ
मुझे आकाश से बहुत प्यार है।
वह चिड़िया जो–
चोंच खोलकर
पेट की आग बुझाने खातिर
दाने-दाने चुग लेती है
नीले पँखों वाली मैं हूँ
मुझे अन्न से बहुत प्यार है।

प्रश्न 4. तुम भी ऐसी कल्पना कर सकते हो कि ''वह फूल का पौधा जो–पीली पँखुड़ियों वाला–महक रहा है–मैं हूँ।'' उसकी विशेषताएँ मुझ में हैं ..... । फूल के बदले वह कोई दूसरी चीज भी हो सकती है, जिसकी विशेषताओं को गिनाते हुए तुम उसी चीज से अपनी समानता बता सकते हो ..... ऐसी कल्पना के आधार पर कुछ पंक्तियाँ लिखो।

उत्तर– वह सूरज जो–
रोज सुबह उगकर
अपनी पीली-सफेद किरणों से
धरती पर उजाला फैलाता है
चमकता हुआ गोला जैसा
दमक रहा है–मैं हूँ
मुझे रोशनी से बहुत प्यार है।

भाषा की बात–

प्रश्न 1. पंखोंवाली चिड़िया ऊपरवाली दराज
नीले पंखोंवाली चिड़िया सबसे ऊपरवाली दराज
यहाँ रेखांकित शब्द विशेषण का काम कर रहे हैं। ये शब्द चिड़िया और दराज़ संज्ञाओं की विशेषता बता रहे हैं, अतः रेखांकित शब्द विशेषण हैं और चिड़िया, दराज़ विशेष्य हैं। यहाँ 'वाला/वाली' जोड़कर बनने वाले कुछ और विशेषण दिए गए हैं। ऊपर दिए गए उदाहरणों की तरह इनके आगे एक-एक विशेषण और जोड़ो।

उत्तर– **सुंदर** मोरोंवाला बाग — **मोरोंवाला बाग**
ठिगने पेड़ोंवाला घर — **पेड़ोंवाला घर**
पीले फूलोंवाली क्यारी — **फूलोंवाली क्यारी**
लम्बा स्कूलवाला रास्ता — **स्कूलवाला रास्ता**

संस्कृत–कक्षा-6

रुचिरा-प्रथमो भागः

प्रथमः पाठः–शब्दपरिचयः-I

पाठ-परिचय–प्रस्तुत पाठ में अकारान्त पुंल्लिङ्ग शब्दों का परिचय कराया गया है। जिन शब्दों के अन्त में 'अ' स्वर आता है, वे अकारान्त शब्द कहलाते हैं। पुरुष जाति का ज्ञान कराने वाले शब्द पुंल्लिङ्ग कहलाते हैं। **जैसे**—राम, मोहन, वृक्ष, बालक, वृद्ध आदि। पाठ में अकारान्त पुंल्लिङ्ग शब्दों के साथ प्रयोग में आने वाले सर्वनाम शब्दों का तथा कर्त्ता पद के साथ प्रयुक्त क्रियाओं (धातुओं) का भी प्रायोगिक ज्ञान कराया गया है। संज्ञा शब्दों में जो लिङ्ग, विभक्ति एवं वचन होता है, वही सर्वनाम में भी होता है। **जैसे**—एषः चषकः। यहाँ 'चषकः' संज्ञा शब्द पुंल्लिंग, प्रथमा विभक्ति व एकवचन का रूप है, अतः 'एषः' सर्वनाम भी पुल्लिंग, प्रथमा विभक्ति व एकवचन का रूप है। इसी प्रकार कर्ता जिस पुरुष एवं वचन का होता है, क्रिया भी उसी पुरुष एवं वचन की आती है। **जैसे**—बालकः पठति। सः क्रीडति। ते गच्छन्ति। आवां वदावः। यूयम् चलथ।

कठिन शब्दार्थ एवं हिन्दी अनुवाद

(1) एषः कः ?.....सः वस्त्रं सीव्यति।

शब्दार्थाः–एषः = यह। **कः** = कौन। **चषकः** = गिलास। **किम्** = क्या। **बृहत्** = बड़ा। **लघुः** = छोटा। **सः** = वह। **सौचिकः** = दर्ज़ी। **खेलति** = खेलता है। **न** = नहीं। **करोति** = करता है। **वस्त्रम्** = कपड़ा। **सीव्यति** = सिलाई करता है।

हिन्दी-अनुवाद–यह क्या (कौन) है? यह गिलास है।
क्या यह बड़ा है? नहीं, यह छोटा है।
वह कौन है? वह दर्ज़ी है।
दर्ज़ी क्या करता है? क्या वह खेलता है?
नहीं, वह कपड़ा सिलता (सींता) है।

विशेष–यहाँ सभी वाक्य प्रथम पुरुष एकवचन में प्रयुक्त हुए हैं।

(2) एतौ कौ? एतौ ..... तौ क्षेत्रं कर्षतः।

शब्दार्थाः–एतौ = ये दोनों। **कौ (पु.)** = कौन। **स्तः** = हैं। **शुनकौ** = (दो) कुत्ते। **गर्जतः** = गरजते हैं। **उच्चैः** = ज़ोर से। **बुक्कतः** = भौंकते हैं। **तौ** = वे दोनों। **बलीवर्दौ** = दो बैल। **धावतः** = दौड़ते हैं। **क्षेत्रम्** = खेत। **कर्षतः** = जोतते हैं।

हिन्दी-अनुवाद–ये दोनों कौन हैं? ये दोनों कुत्ते हैं।
क्या ये दोनों गरजते हैं? नहीं, ये दोनों जोर से भौंकते हैं।
वे दोनों कौन हैं? वे दोनों बैल हैं।
क्या वे दोनों दौड़ रहे (दौड़ते) हैं? नहीं, वे दोनों खेत जोत रहे (जोतते) हैं।

विशेष–उपर्युक्त सभी वाक्यों में प्रथम पुरुष द्विवचन का प्रयोग हुआ है।

(3) एते के? ..... नहि ते हसन्ति।

शब्दार्थाः–एते = ये (बहुवचन)। **के** = कौन/क्या (बहुवचन)। **स्यूताः** = बैग/थैले। **हरितवर्णाः** = हरे रंग के। **नीलवर्णाः** = नीले रंग के। **ते** = वे, सब। **गायन्ति** = गाते/गा रहे हैं। **वृद्धाः** = बूढ़े। **हसन्ति** = हँसते हैं/ हँस रहे हैं।

हिन्दी-अनुवाद–ये (सब) कौन हैं? ये थैले हैं।
क्या ये हरे रंग के हैं? नहीं, ये नीले रंग के हैं।

वे कौन हैं? वे वृद्ध (बूढ़े) हैं।
क्या वे गा रहे (गाते) हैं? नहीं, वे हँस रहे (हँसते) हैं।
विशेष–उपर्युक्त सभी वाक्यों में बहुवचन का प्रयोग हुआ है।

पाठ्यपुस्तक के प्रश्नोत्तर

प्रश्नः 1. (क) उच्चारणं कुरुत–(उच्चारण कीजिए–)

छात्रः	गजः	घटः
शिक्षकः	मकरः	दीपकः
मयूरः	बिडालः	अश्वः
शुकः	मूषकः	चन्द्रः
बालकः	चालकः	गायकः

उत्तरम्–[नोट–उपर्युक्त सभी अकारान्त पुंल्लिङ्ग शब्दों का उच्चारण अपने अध्यापकजी की सहायता से स्वयं कीजिए तथा इनके अर्थ को भी जानिए।]

(ख) चित्राणि दृष्ट्वा पदानि उच्चारयत–(चित्रों को देखकर शब्दों का उच्चारण कीजिए–)

[नोट–पाठ्यपुस्तक में दिये गये चित्र को देखें।]

उत्तरम्–[नोट–पाठ्यपुस्तक में दिये गए चित्रों को देखकर तथा चित्रों के संस्कृत में नाम याद करते हुए उनका उच्चारण अपने अध्यापकजी की सहायता से कीजिए।]

प्रश्नः 2. (क) वर्णसंयोजनेन पदं लिखत–(वर्ण जोड़ कर पद लिखिए–)

यथा– च् + अ + ष् + अ + क् + अः = **चषकः**

उत्तरम्–स् + औ + च् + इ + क् + अः = **सौचिकः**

श् + उ + न् + अ + क् + औ = **शुनकौ**

ध् + आ + व् + अ + त् + अः = **धावतः**

व् + ऋ + द् + ध् + आः = **वृद्धाः**

ग् + आ + य् + अ + न् + त् + इ = **गायन्ति**

(ख) पदानां वर्णविच्छेदं प्रदर्शयत–(पदों का वर्णविच्छेद प्रदर्शित कीजिए–)

यथा–लघुः = ल् + अ (ल) + घ् + उः (घुः)

उत्तरम्–सीव्यति = स् + ई (सी) + व् + य् + अ (व्य) + त् + इ (ति)

वर्णाः = व् + अ (व) + र् + ण् + आः (र्णाः)

कुक्कुरौ = क् + उ (कु) + क् + क् + उ (क्कु) + र् + औ (रौ)

मयूराः = म् + अ (म) + य् + ऊ (यू) + र् + आः (राः)

बालकः = ब् + आ (बा) + ल् + अ (ल) + क् + अः (कः)

प्रश्नः 3. उदाहरणं दृष्ट्वा रिक्तस्थानानि पूरयत–(उदाहरण देखकर रिक्तस्थानों की पूर्ति कीजिए–)

यथा–	चषकः	चषकौ	चषकाः
उत्तरम्–	**बलीवर्दः**	बलीवर्दौ	**बलीवर्दाः**
	शुनकः	**शुनकौ**	**शुनकाः**
	मृगः	**मृगौ**	मृगाः
	सौचिकः	सौचिकौ	**सौचिकाः**
	मयूरः	**मयूरौ**	**मयूराः**

प्रश्नः 4. चित्राणि दृष्ट्वा संस्कृतपदानि लिखत–(चित्रों को देखकर संस्कृत के पद लिखिए–)

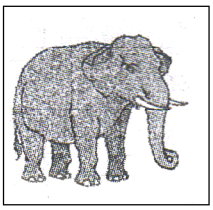

(i).....

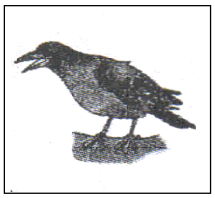

(ii).....

(iii).....

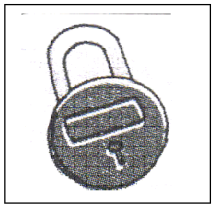

(iv).....

(v).....

(vi).....

उत्तरम्–(i) गजः, (ii) काकः, (iii) चन्द्रः, (iv) तालः, (v) ऋक्षः, (vi) बिडालः।

प्रश्नः 5. चित्र दृष्ट्वा उत्तरम् लिखत–(चित्र देखकर उत्तर लिखिए–)

विज्ञान–कक्षा 6

1. भोजन के घटक

पाठ-सार

1. पादप तथा जन्तुओं से प्राप्त होने वाले भोजन से हमें अनेक पोषक तत्त्व, जैसे–प्रोटीन, वसा, कार्बोहाइड्रेट, विटामिन, खनिज लवण आदि मिलते हैं। इनके अतिरिक्त भोजन में आहारी रेशे तथा जल भी होता है। ये सभी घटक हमारे शरीर के लिए आवश्यक होते हैं।
2. कार्बोहाइड्रेट्स कई प्रकार के होते हैं। हमारे भोजन में मुख्यत: यह मंड तथा शर्करा के रूप में पाये जाते हैं।
3. कार्बोहाइड्रेट तथा वसा हमारे शरीर को ऊर्जा प्रदान करते हैं इसलिए कार्बोहाइड्रेट और वसायुक्त भोजन को 'ऊर्जा देने वाला भोजन' भी कहते हैं।
4. हमारे शरीर की वृद्धि तथा अनुरक्षण के लिए प्रोटीन तथा खनिज लवणों की आवश्यकता होती है।
5. विटामिन कई प्रकार के होते हैं तथा रोगों से हमारे शरीर की रक्षा करते हैं।
6. रूक्षांश आहारी रेशे होते हैं तथा बिना पचे भोजन को बाहर निकालने में हमारे शरीर की सहायता करते हैं।
7. संतुलित आहार में हमारे शरीर के लिए आवश्यक सभी पोषक तत्त्व, रूक्षांश तथा जल उचित मात्रा में उपस्थित होते हैं।
8. लम्बी अवधि तक भोजन में एक अथवा किसी विशेष पोषक तत्त्व की कमी होने पर व्यक्ति को अभावजन्य रोग हो सकते हैं।

पाठगत प्रश्न

पृष्ठ 7

प्रश्न 1. क्या जन्तुओं के भोजन में भी ये सभी अवयव होते हैं और क्या उन्हें भी संतुलित भोजन की आवश्यकता है?

उत्तर–हाँ, जन्तुओं के भोजन में भी ये सभी अवयव होते हैं और उन्हें भी हमारी तरह ही संतुलित भोजन की आवश्यकता होती है।

पाठ्यपुस्तक के प्रश्न

प्रश्न 1. हमारे भोजन के मुख्य पोषक तत्त्वों के नाम लिखिए।

उत्तर–हमारे भोजन के मुख्य पोषक तत्त्व कार्बोहाइड्रेट, प्रोटीन, वसा, विटामिन तथा खनिज-लवण हैं। इनके अतिरिक्त हमारे भोजन में रूक्षांश (आहारी रेशे) और जल भी होते हैं।

प्रश्न 2. निम्नलिखित के नाम लिखिए–

(क) पोषक जो मुख्य रूप से हमारे शरीर को ऊर्जा देते हैं।

उत्तर–कार्बोहाइड्रेट और वसा।

(ख) पोषक जो हमारे शरीर की वृद्धि और अनुरक्षण के लिए आवश्यक हैं।

उत्तर–प्रोटीन और खनिज लवण।

(ग) वह विटामिन जो हमारी अच्छी दृष्टि के लिए आवश्यक है।

उत्तर–विटामिन-A

(घ) वह खनिज जो अस्थियों के लिए आवश्यक है।

उत्तर–कैल्सियम।

प्रश्न 3. दो ऐसे खाद्य पदार्थों के नाम लिखिए, जिनमें निम्न पोषक प्रचुर मात्रा में उपलब्ध होते हैं–

(क) वसा (ख) मंड (ग) आहारी रेशे (घ) प्रोटीन।

उत्तर–

(क) वसा – मूँगफली, दूध
(ख) मंड – आलू, चावल
(ग) आहारी रेशे – ताजे फल, साबुत खाद्यान्न
(घ) प्रोटीन – सोयाबीन, पनीर

प्रश्न 4. इनमें सही कथन को (✓) अंकित कीजिए–

(क) केवल चावल खाने से हम अपने शरीर की पोषण आवश्यकताओं को पूरा कर सकते हैं। ( )

(ख) संतुलित आहार खाकर अभावजन्य रोगों की रोकथाम की जा सकती है। ( )

(ग) शरीर के लिए संतुलित आहार में नाना प्रकार के खाद्य पदार्थ होने चाहिए। ( )

(घ) शरीर को सभी पोषक तत्त्व उपलब्ध कराने के लिए केवल माँस पर्याप्त है। ( )

उत्तर–(क) ✗ (ख) ✓ (ग) ✓ (घ) ✗

प्रश्न 5. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

(क) ..... विटामिन D के अभाव से होता है।

(ख) ..... की कमी से बेरी-बेरी नामक रोग होता है।

(ग) विटामिन C के अभाव से ..... नामक रोग होता है।

(घ) हमारे भोजन में ..... के अभाव से रतौंधी होती है।

उत्तर–(क) रिकेट्स (ख) विटामिन B_1 (ग) स्कर्वी (घ) विटामिन A

अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्न

बहुचयनात्मक प्रश्न–

प्रश्न 1. प्रोटीन के परीक्षण के दौरान कौनसा रंग खाद्य पदार्थ में 'प्रोटीन' की उपस्थिति को दर्शाता है?

(अ) लाल (ब) पीला

(स) बैंगनी (द) हरा ( )

प्रश्न 2. कागज पर तेल का धब्बा खाद्य पदार्थ में किसकी उपस्थिति को दर्शाता है?

(अ) वसा (ब) प्रोटीन

(स) मंड (द) विटामिन ( )

प्रश्न 3. हमारा शरीर सूर्य के प्रकाश की उपस्थिति में कौनसा विटामिन बनाता है?

(अ) विटामिन-A (ब) विटामिन-B

(स) विटामिन-C (द) विटामिन-D ( )

प्रश्न 4. कार्बोहाइड्रेट समृद्ध भोजन है–

(अ) दूध (ब) चावल

(स) पालक (द) टमाटर ( )

प्रश्न 5. ''दुर्बल पेशियाँ और काम करने की ऊर्जा में कमी होना'' निम्न में से किस रोग के मुख्य लक्षण हैं–

(अ) रतौंधी (ब) स्कर्वी

(स) बेरी-बेरी (द) गॉयटर ( )

प्रश्न 6. विटामिन-A का प्रमुख स्रोत है—

(अ) पपीता (ब) चावल

(स) संतरा (द) मिर्च ( )

प्रश्न 7. प्रोटीन परीक्षण हेतु अभीष्ट कॉस्टिक सोडा विलयन बनाने हेतु 100 मिली जल में कितने ग्राम कॉस्टिक सोडा घोलना चाहिए?

(अ) 100 ग्राम (ब) 50 ग्राम

(स) 10 ग्राम (द) 5 ग्राम ( )

प्रश्न 8. किण्वित भोजन का उदाहरण है—

(अ) मिस्सी रोटी (ब) थेपला

(स) सत्तू (द) इडली ( )

प्रश्न 9. आयोडीन का स्रोत है—

(अ) सेब (ब) अदरक

(स) केला (द) आँवला ( )

प्रश्न 10. रोगों से हमारे शरीर की रक्षा करने में सहायक है—

(अ) वसा (ब) मण्ड

(स) विटामिन

(द) उपर्युक्त में से कोई नहीं ( )

उत्तर–1. (स) 2. (अ) 3. (द) 4. (ब) 5. (स) 6. (अ) 7. (स) 8. (द) 9. (ब) 10. (स)।

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

1. खाद्य पदार्थ में ..... या ..... रंग मंड की उपस्थिति को दर्शाता है।

2. प्रोटीन की आवश्यकता शरीर की ..... तथा ..... रहने के लिए होती है।

3. विटामिनों के एक समूह को ..... कहते हैं।

4. भोजन पकाते समय ..... आसानी से गर्मी पाकर नष्ट हो जाता है।

5. हमारे शरीर को खनिज लवणों की आवश्यकता ..... मात्रा में होती है।

6. हमारे खाने में रूक्षांश की पूर्ति मुख्यतः ..... उत्पादों से होती है।

7. सभी अभावजन्य रोगों की रोकथाम ..... आहार लेने से की जा सकती है।

8. आहारी रेशे ..... के नाम से भी जाने जाते हैं।

उत्तर–1. नीला, काला 2. वृद्धि, स्वस्थ 3. विटामिन-B कॉम्प्लैक्स 4. विटामिन-C 5. अल्प 6. पादप 7. संतुलित 8. रूक्षांश।

निम्न में से सत्य/असत्य कथन छाँटिए–

प्र. 1. विटामिन हमारे शरीर को रोगों से रक्षा करने में सहायता करते हैं। (सत्य/असत्य)

प्र. 2. सभी अभावजन्य रोगों की रोकथाम सामान्य आहार लेने से की जा सकती है। (सत्य/असत्य)

प्र. 3. रूक्षांश बिना पचे भोजन को बाहर निकालने में हमारे शरीर की सहायता करता है।(सत्य/असत्य)

प्र. 4. हमारा शरीर सूर्य के प्रकाश की उपस्थिति में विटामिन-C बनाता है। (सत्य/असत्य)

प्र. 5. प्रोटीन युक्त भोजन को प्रायः 'शरीर वर्धक भोजन' कहते हैं। (सत्य/असत्य)

उत्तर–1. सत्य 2. असत्य 3. सत्य 4. असत्य 5. सत्य।

गणित–कक्षा 6

1. अपनी संख्याओं की जानकारी

मुख्य बिन्दु

1. संख्याओं को संख्यांकों (numerals) द्वारा निरूपित किया जा सकता है।
2. संख्याओं द्वारा प्रत्यक्ष वस्तुओं को गिना जा सकता है।
3. दो संख्याओं में वही संख्या बड़ी होती है, जिसमें अंकों की संख्या अधिक होती है। दोनों में अंकों की संख्या समान होने पर हम उनके सबसे बाएँ स्थित अंकों की तुलना करते हैं और जिस संख्या में यह अंक बड़ा होगा वही बड़ी भी होगी। अगर ये अंक भी समान हैं, तब हम इसी प्रकार अंकों की तुलना करते जाते हैं।
4. संख्याओं को आरोही (छोटे से बड़े) या अवरोही (बड़े से छोटे) क्रम में व्यवस्थित करने के लिए भी हम उक्त विधि ही प्रयोग में लाते हैं।
5. आरोही का अर्थ है बढ़ता हुआ क्रम अर्थात् सबसे छोटे से प्रारम्भ कर सबसे बड़े तक व्यवस्थित करना।
6. अवरोही का अर्थ है घटता हुआ क्रम अर्थात् सबसे बड़े से प्रारम्भ कर सबसे छोटे तक व्यवस्थित करना।
7. दिए गए अंकों से संख्या बनाते समय, किसी भी अंक को बिना दोहराए, बड़ी से बड़ी संख्या बनाने के लिए सबसे बड़े अंक को सबसे बाईं ओर रखना होगा और फिर उससे छोटे अंक रखते जाएंगे।
8. चार अंकों की सबसे छोटी संख्या 1000 है। अतः तीन अंकों की सबसे बड़ी संख्या 999 होगी। पाँच अंकों की सबसे बड़ी संख्या 10,000 है, अतः चार अंकों की बड़ी से बड़ी संख्या 9999 होगी। छः अंकों की छोटी से छोटी संख्या 1,00,000 (एक लाख) है अतः पाँच अंकों की बड़ी से बड़ी संख्या 99999 होगी। यही क्रम और बड़ी संख्याओं के लिए भी लागू होता है।
9. अल्प-विरामों के प्रयोग से संख्याएँ लिखने तथा पढ़ने में सहायता मिलती है। भारतीय संख्यांकन पद्धति में पहला अल्प विराम दाईं ओर से प्रारंभ कर तीन अंकों बाद और शेष दो-दो अंकों बाद लगाए जाते हैं। ये अल्प विराम क्रमशः हजार, लाख व करोड़ को अलग-अलग करते हैं।
10. अंतर्राष्ट्रीय संख्यांकन पद्धति में अल्प विराम दाईं ओर से प्रारंभ कर तीन-तीन अंकों के बाद लगाए जाते हैं। तीन और छः अंकों के बाद अल्प विराम क्रमशः हजार व मिलियन को अलग-अलग करते हैं।
11. किसी संख्या में दाईं ओर से पहला अंक इकाई, दूसरा अंक दहाई, तीसरा अंक सैकड़ा, चौथा अंक हजार, पाँचवाँ अंक दस हजार तथा छठा अंक लाख दर्शाता है।
12. दस लाख = 1 मिलियन; दस मिलियन = 1 करोड़; 1 बिलियन = 1000 मिलियन
13. लम्बाई मापने के लिए–

    10 मिलीमीटर (मिमी) = 1 सेंटीमीटर (सेमी)
    1 मीटर = 100 सेंटीमीटर = 1000 मिलीमीटर
    1 किलोमीटर = 1000 मीटर
14. भार मापने के लिए–

    1 किलोग्राम = 1000 ग्राम
    1 ग्राम = 1000 मिलीग्राम

पाठगत प्रश्न

पृष्ठ 2 प्रयास कीजिए

प्रश्न–क्या आप तुरंत ज्ञात कर सकते हैं कि प्रत्येक पंक्ति में कौन-सी संख्या सबसे बड़ी है और कौन-सी संख्या सबसे छोटी है?

1. 382, 4972, 18, 59785, 750
2. 1473, 89423, 100, 5000, 310
3. 1834, 75284, 111, 2333, 450
4. 2853, 7691, 9999, 12002, 124

क्या यह सरल था? यह सरल क्यों था?

उत्तर–1. 59785 सबसे बड़ी संख्या है तथा 18 सबसे छोटी संख्या है।

2. 89423 सबसे बड़ी संख्या है तथा 100 सबसे छोटी संख्या है।

3. 75284 सबसे बड़ी संख्या है तथा 111 सबसे छोटी संख्या है।

4. 12002 सबसे बड़ी संख्या है तथा 124 सबसे छोटी संख्या है।

इन संख्याओं को तुरन्त ज्ञात करना सरल था। निम्न नियमों का पालन करते हुए यह सरल था–

(1) वह संख्या जिसमें अंकों की संख्या अधिक होती है, वह दूसरी संख्या से बड़ी होती है।

(2) यदि दो संख्याओं के अंकों की संख्या समान हो तो जिस संख्या में सबसे बाईं ओर का अंक बड़ा होगा वह संख्या बड़ी होगी।

(3) यदि दो संख्याओं में सबसे बाईं ओर के अंक बराबर हों तो बाईं ओर के अगले अंक की तुलना करें।

पृष्ठ 3-I प्रयास कीजिए

प्रश्न–प्रत्येक समूह में सबसे बड़ी और सबसे छोटी संख्याएँ ज्ञात कीजिए–

(a) 4536, 4892, 4370, 4452

(b) 15623, 15073, 15189, 15800

(c) 25286, 25245, 25270, 25210

(d) 6895, 23787, 24569, 24659

इसी प्रकार के पाँच प्रश्न और बनाइए और हल करने के लिए अपने मित्रों को दीजिए।

उत्तर–(a) इस समूह में सभी संख्याओं 4536, 4892, 4370 तथा 4452 में अंकों की संख्या समान है। आगे, सभी में सबसे बायां अंक अर्थात् हजार के स्थान पर समान अंक हैं। सौ के स्थान पर लिखे अंकों को अवरोही क्रम में लिखते हैं–$8 > 5 > 4 > 3$

अतः 4892 सबसे बड़ी संख्या है तथा 4370 सबसे छोटी संख्या है।

(b) इस समूह में सभी संख्याओं 15623, 15073, 15189 तथा 15800 में अंकों की संख्या समान है। आगे, सभी में दस हजार के स्थान पर तथा हजार के स्थान पर समान अंक हैं। सौवें स्थान पर लिखे अंकों को अवरोही क्रम में लिखते हैं–$8 > 6 > 1 > 0$.

अतः 15800 सबसे बड़ी संख्या है तथा 15073 सबसे छोटी संख्या है।

(c) इस समूह में सभी संख्याओं 25286, 25245, 25270 तथा 25210 में अंकों की संख्या समान है। आगे, सभी में दस हजार के स्थान पर, हजार के स्थान पर तथा सौ के स्थान पर सभी अंक समान हैं। दहाई के स्थान पर अंकों को अवरोही क्रम में इस प्रकार लिखा जा सकता है–$8 > 7 > 4 > 1$.

अतः 25286 सबसे बड़ी संख्या है तथा 25210 सबसे छोटी संख्या है।

(d) इस समूह में 6895 में अंकों की संख्या सबसे कम है। अतः यह दी गई संख्याओं में सबसे छोटी संख्या है।

अतः 6895 सबसे छोटी संख्या है।

शेष संख्याओं 23787, 24569 तथा 24659 में अंकों की संख्या समान है। आगे, दस हजार के स्थान पर तथा हजार के स्थान पर सभी अंक समान हैं (23787 के अलावा, क्योंकि हम सबसे बड़ी संख्या ढूँढ़ रहे हैं।)

सौवें स्थान पर अंकों की तुलना करने पर हम पाते हैं कि $5 < 6$.

अतः 24659 सबसे बड़ी संख्या है।

इसी प्रकार के पाँच और प्रश्न

प्रत्येक समूह में सबसे बड़ी और सबसे छोटी संख्याएँ ज्ञात कीजिए–

(1) 8647, 8903, 8481, 8563

(2) 16734, 16184, 16290, 16811

(3) 26397, 26356, 26381, 26321

(4) 7896, 24898, 25670, 25960

(5) 7542, 7549, 7547, 7545

हल–(1) इस समूह में दी गई संख्याओं में हजार के स्थान पर दिए गए अंक समान हैं। आगे, सौ के स्थान पर दिए अंकों को अवरोही क्रम में लिखने पर $9 > 6 > 5 > 4$

अतः 8903 सबसे बड़ी संख्या है और 8481 सबसे छोटी संख्या है।

सामाजिक विज्ञान–कक्षा-6

हमारे अतीत-1 (इतिहास)

अध्याय 1. प्रारंभिक कथन : क्या, कब, कहाँ और कैसे?

पाठ-सार

(1) अतीत के बारे में बहुत कुछ जाना जा सकता है, जैसे–लोग क्या खाते थे, कैसे कपड़े पहनते थे, किस तरह के घरों में रहते थे? हम आखेटकों, पशुपालकों, कृषकों, शासकों, व्यापारियों, पुरोहितों, शिल्पकारों, संगीतकारों व वैज्ञानिकों के जीवन की जानकारी एवं उस समय के खेलों, कहानियों, नाटकों एवं गीतों की जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

(2) कई लाख वर्ष पहले से लोग नर्मदा नदी के तट पर रह रहे हैं। यहाँ रहने वाले आरंभिक लोग जंगली उत्पादों के कुशल संग्राहक तथा शिकारी थे। उत्तर–पश्चिम की सुलेमान और किरथर पहाड़ियों के क्षेत्र में लगभग 8 हजार वर्ष पूर्व लोगों ने सबसे पहले गेहूँ और जौ जैसी फसलें उगाना प्रारंभ किया तथा भेड़, बकरी, गाय–बैल जैसे पशुओं को पालतू बनाना प्रारंभ किया।

उत्तर–पूर्व में गारो तथा मध्य भारत में विंध्य पहाड़ियों के कुछ अन्य क्षेत्रों में सबसे पहले चावल उपजाया गया।

सिंधु तथा इसकी सहायक नदियों के किनारे लगभग 4700 वर्ष पूर्व कुछ आरंभिक नगर फूले–फले। गंगा तथा इसकी सहायक नदी सोम के आस–पास प्राचीन काल में मगध (बिहार) में विशाल राज्य स्थापित हुआ।

(3) लोगों ने सदैव उपमहाद्वीप के एक भाग से दूसरे भाग तक यात्रा की। ये यात्राएँ कभी काम की तलाश में, कभी प्राकृतिक आपदाओं के कारण, कभी सैनिक विजयों हेतु, कभी व्यापार के लिए, कभी शिक्षा व सलाह देने हेतु धार्मिक गुरुओं का आना–जाना, तो कभी रोचक स्थानों की खोज के लिए होती थीं। इन यात्राओं से लोगों को एक–दूसरे के विचारों को जानने का मौका मिला।

(4) पहाड़ियाँ, पर्वत और समुद्र दक्षिण एशिया उपमहाद्वीप की प्राकृतिक सीमा का निर्माण करते हैं। लेकिन उपमहाद्वीप के बाहर से भी कुछ लोग यहां आए और यहीं बस गए। लोगों के इस आवागमन ने हमारी सांस्कृतिक परम्पराओं को समृद्ध किया।

(5) अपने देश के लिए हम प्राय: इण्डिया और भारत जैसे नामों का प्रयोग करते हैं। इण्डिया शब्द इण्डस से निकला है जिसे संस्कृत में सिंधु कहा जाता है। 2500 वर्ष पूर्व यहाँ आये ईरानियों और यूनानियों ने सिंधु को हिंदोस और इस नदी से पूर्व में स्थित भूमि प्रदेश को इण्डिया कहा।

(6) प्राचीन पाण्डुलिपियाँ, अभिलेख, पुरातात्विक सामग्री आदि इतिहास को जानने के स्रोत हैं।

(7) वर्ष की गणना ईसाई धर्म-प्रवर्तक ईसा मसीह के जन्म की तिथि से की जाती है।

पाठगत प्रश्न

पृष्ठ 3

प्रश्न–आज लोग यात्राएँ क्यों करते हैं?

उत्तर–आज लोग प्राय: निम्न कारणों से यात्राएँ करते हैं—

(1) काम की तलाश में
(2) प्राकृतिक आपदाओं के कारण
(3) अध्ययन हेतु
(4) धार्मिक कारणों से
(5) व्यापार करने हेतु
(6) पर्यटन हेतु
(7) नाते-रिश्तेदारों से मिलने हेतु आदि।

पृष्ठ 5

प्रश्न–क्या तुम बता सकती हो कि कठोर सतह पर लेख लिखवाने के क्या लाभ थे? ऐसा करवाने में क्या-क्या कठिनाइयाँ आती थीं?

उत्तर–कठोर सतह पर लेख लिखवाने के निम्न लाभ थे—

(1) इन्हें खुली जगहों पर भी स्थापित किया जा सकता था।

(2) ये आसानी से खराब नहीं हो सकते थे।

(3) ये लम्बे समय तक सुरक्षित बने रहते थे।

कठिनाइयाँ—

(1) कठोर सतह पर हर व्यक्ति नहीं लिख सकता था।

(2) कठोर सतह पर लिखने में बहुत समय लगता था।

(3) इसके लिए नुकीले औजार मिलना मुश्किल था।

पृष्ठ 6

प्रश्न–क्या पुरातत्वविदों को बहुधा कपड़ों के अवशेष मिलते होंगे?

उत्तर–नहीं, पुरातत्वविदों को बहुधा कपड़ों के अवशेष नहीं मिलते होंगे।

पृष्ठ 8

प्रश्न–पृष्ठ 3 पर दो तिथियाँ हैं, उनका पता लगाओ। इनके लिए तुम किस अक्षर समूह का प्रयोग करोगे?

उत्तर–पृष्ठ 3 पर दो तिथियाँ हैं—(i) 4700 वर्ष पूर्व (ii) 2500 वर्ष पूर्व। इनके लिए हम बी.सी. (ई.पू.) अक्षर समूह का प्रयोग करेंगे।

पाठ्यपुस्तक के प्रश्न

आओ याद करें–

प्रश्न 1. निम्नलिखित का सुमेल करो—

नर्मदा घाटी	–	पहला बड़ा राज्य
मगध	–	आखेट तथा संग्रहण
गारो पहाड़ियाँ	–	लगभग 2500 वर्ष पूर्व के नगर
सिंधु तथा इसकी सहायक नदियाँ	–	आरंभिक कृषि
गंगा घाटी	–	प्रथम नगर

उत्तर–

नर्मदा घाटी	–	आखेट तथा संग्रहण
मगध	–	पहला बड़ा राज्य
गारो पहाड़ियाँ	–	आरंभिक कृषि
सिंधु तथा इसकी सहायक नदियाँ	–	प्रथम नगर
गंगा घाटी	–	लगभग 2500 वर्ष पूर्व के नगर

प्रश्न 2. पाण्डुलिपियों तथा अभिलेखों में एक प्रमुख अन्तर बताओ।

उत्तर–पाण्डुलिपियाँ प्राय: ताड़पत्रों अथवा भोजपत्रों पर हाथ से लिखी मिलती हैं तथा इनके नष्ट होने की संभावना अधिक होती है। जबकि अभिलेख पत्थर अथवा धातु जैसी अपेक्षाकृत कठोर सतहों पर उत्कीर्ण किए गए मिलते हैं। इनके नष्ट होने की संभावना कम होती है।

आओ चर्चा करें–

प्रश्न 3. रशीदा के प्रश्न को फिर से पढ़ो। इसके क्या उत्तर हो सकते हैं?

उत्तर–रशीदा का प्रश्न था कि 'यह कोई कैसे जान सकता है कि इतने वर्षों पहले क्या हुआ था?'

इस प्रश्न के निम्न उत्तर हो सकते हैं—

(1) पाण्डुलिपियों द्वारा

(2) महाकाव्य, कविताओं तथा नाटकों द्वारा

(3) शिलालेखों एवं अभिलेखों द्वारा

(4) पुरातात्विक सामग्री द्वारा, यथा—इमारतों के अवशेषों, चित्रों, मूर्तियों, औजारों, हथियारों, बर्तनों, आभूषणों, सिक्कों, जानवरों की हड्डियों द्वारा।

प्रश्न 4. पुरातत्वविदों द्वारा पाई जाने वाली सभी वस्तुओं की एक सूची बनाओ। इनमें से कौनसी वस्तुएँ पत्थर की बनी हो सकती हैं?

उत्तर–पुरातत्वविदों द्वारा पाई जाने वाली वस्तुओं की सूची—

1. इमारतों के अवशेष 2. चित्र 3. मूर्तियाँ 4. औजार 5. हथियार 6. भोजन के पात्र 7. आभूषण 8. सिक्के 9. जानवरों की हड्डियाँ 10. अभिलेख 11. शिलालेख 12. पांडुलिपि

इनमें से निम्न वस्तुएँ पत्थर की बनी हो सकती हैं—

1. इमारतों के अवशेष 2. चित्र (पत्थरों/शिलाओं/दीवारों पर) 3. मूर्तियाँ 4. औजार 5. हथियार 6. आभूषण 7. अभिलेख 8. शिलालेख 9. भोजन के पात्र

प्रश्न 5. साधारण स्त्री तथा पुरुष अपने कार्यों का विवरण क्यों नहीं रखते थे? इसके बारे में तुम क्या सोचते हो?

उत्तर–हमारे विचार में साधारण स्त्री तथा पुरुष अपने कार्यों का विवरण निम्न कारणों से नहीं रखते थे—

(1) शिक्षा एवं लेखन कार्य प्राय: उच्च वर्ग तक ही सीमित था।

(2) साधारण स्त्री तथा पुरुष संभवत: लेखन कला से अपरिचित थे।

(3) विवरण रखने की कोई उचित विधि उपलब्ध नहीं थी।